सुजण जी सोभिया, चई वञे न वाच सां,
सूरिज, चंदिर, चिराख लख, लजामान थिया,
सामी मोहिया सूरिमा, जनि दीदार किया,
लंघे पारि पिया, अविद्या जो आड़ाह खों.

परमेश्वर की सुंदरता का वर्णन करते हुए महाकवि सामी कहते हैं कि परमेश्वर की सुंदरता मुख से, वाणी से वर्णित नहीं की जा सकती। परमेश्वर इतने सुंदर हैं कि इनके सामने सूर्य, चंद्र और लाखों दीपक भी लज्जित हो जाते हैंअर्थात् वे सब उस सुंदरता की बराबरी नहीं कर सकते। प्रभु के ऐसे दिव्य सौंदर्य पर मोहित होकर कुछ विरले वीर ही उनके दर्शन कर पाते हैं। ऐसे ज्ञानी पुरुष अविद्या के गहन सागर को पार कर सके हैं।

सृष्टि के निर्माता परमेश्वर अति सुंदर हैं, इसी कारण सब को आकर्षित करते हैं, मोहित करते हैं। परमेश्वर के दिव्य सौंदर्य के सामने सूर्य, चंद्र आदि का प्रकाश फीका पड़ जाता है। अर्थात् वे इन सभी से अधिक सुंदर हैं। परमेश्वर बहुत सुंदर हैं इसलिए सभी मनुष्यों के आकर्षण एवं प्रेम के केंद्र बने हुए हैं। देवता भी प्रभु से प्रेम करते हैं। मनुष्य अथवा देवताओं की वाणी में उतना सामर्थ्य नहीं है, जो भगवान के सौंदर्य का यथार्थ वर्णन कर सकें। इस दिव्य सौंदर्य की एक झलक पाने के लिए मनुष्य लालायित रहते हैं। सभी मनुष्य प्रभु के दर्शन करना चाहते हैं। दर्शन की इस प्यास के कारण सच्चे प्रेमी तड़पते रहते हैं। परंतु प्रभु के दर्शन किसी सच्चे, प्रेमी वीर और श्रद्धावान मनुष्य को ही हो सकते हैं।

ब्रह्म/परमेश्वर के दो रूप माने गये हैं। दोनों की महिमा का वर्णन किया गया है। सगुण परमेश्वर की महिमा और सुंदरता का वर्णन करने के लिए भारतीय साहित्य में लाखों कविताएँ लिखी गयी हैं। हजारों कवियों ने ईश्वर का वर्णन किया है। किन्तु परमेश्वर के रूप और स्वरूप का यथार्थ वर्णन कोई नहीं कर सका है। भक्त-कवियों ने और संत-कवियों ने भी भगवान के सुंदर रूप का वर्णन किया है। सूरदास ने श्रीकृष्ण का और संत तुलसीदास ने रामचंद्र का अतीव सुंदर वर्णन किया है। अनेक भक्त कवि भी प्रभु के रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए दिखाई देते हैं। महाराष्ट्र के संत तुकाराम महाराज ने अपने आराध्य देव भगवान विट्ठल के रूप का, मोहिनी मूर्ति का यह वर्णन किया है,

सुंदर ते ध्यान उभे विटेवरी। कर कटावरी ठेवूनिया ।।
तुलसीचे हार गळा कासे पीतांबर। आवडे निरंतर तेचि रूप ।।

■